WEEKLY FOCUS #55
NOV 2021 WEEK 3

VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION
www.visionias.in

# शिक्षा का दार्शनिक आधार

## परिचय

**शिक्षा** किसी भी सभ्य समाज की पहचान होती है। **एक मज़बूत, जीवंत तथा समग्र शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास हेतु आवश्यक है।** शिक्षा की एक मज़बूत प्रणाली के निर्माण के लिए प्रत्येक राष्ट्र को शैक्षिक दर्शन की आवश्यकता होती है। भारत में भी शिक्षा पद्धति गुरुकुल व ब्राह्मणवादी से लेकर मठवासी शिक्षा तथा शैक्षिक यथार्थवाद से आदर्शवादी और व्यवहारवादी शिक्षा के रूप में विकास के अलग–अलग चरणों से आगे बढ़ी है। इन अवधियों के दौरान मूल्य–मान्यताएँ बदलती गईं और नई प्राथमिकताएँ उभरने लगी थीं।

हालांकि, वर्तमान शताब्दी में मूल्यों की गिरावट तथा ह्रास और अवगुणों का प्रसार वैश्विक चिंता का एक विषय बन गया है। एक तरफ जहाँ ज्ञान में विस्फोटक वृद्धि हुई है, वहीं दूसरी तरफ मानवीय मूल्यों में प्रशंसात्मक बढ़ोतरी नहीं देखी गई है। प्रमुख मुद्दा यह है कि आवश्यक चारित्रिक विकास कैसे सुनिश्चित किया जाए और मूल्यों के केवल ज्ञान तथा उन मूल्यों को अपनाने के बीच अंतराल को कैसे समाप्त किया जाए। इस परिस्थिति में **शिक्षा के नए आदर्श या प्रतिमान (न्यू पैराडाइम ऑफ़ एजुकेशन)** को स्थापित करने की आवश्यकता है, जिसका आधार गहन दार्शनिक चिंतन हो।

## वीकली फोकस के इस एजुकेशन सीरीज का एक संक्षिप्त परिचय

आइए, इस एजुकेशन सीरीज के अलग-अलग डाक्यूमेंट्स के माध्यम से भारत में शिक्षा व्यवस्था के संपूर्ण स्पेक्ट्रम को समझते हैं। शैक्षिक दर्शन की सामान्य और गहन समझ से शुरू करते हुए, हम भारत में **प्राथमिक, माध्यमिक** और **उच्चतर शिक्षा** प्रणालियों के मुख्य पहलुओं पर चर्चा करेंगे।

इस दस्तावेज़ में हम शिक्षा के अर्थ तथा उसके वास्तविक उद्देश्य, शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न विचारधाराओं और वर्तमान में उनकी प्रासंगिकता के बारे में जानेंगे। इसके साथ ही हम यह भी जानने का प्रयास करेंगे कि वर्षों से इन **दार्शनिक विचारों** ने भारत की शिक्षा प्रणाली में किस प्रकार स्वयं को समाहित किया है। यहाँ हम यह भी जानने का प्रयास करेंगे कि भारत की **नई शिक्षा नीति** का उद्देश्य कैसे एक नई शिक्षा प्रणाली का निर्माण करना है, जो भारत की परंपराओं और मूल्य प्रणालियों पर आधारित होते हुए भी 21वीं सदी की शिक्षा के आकांक्षात्मक लक्ष्यों के साथ जुड़ी हुई है।

## शिक्षा क्या है तथा यह जीवन और राष्ट्र निर्माण में किस उद्देश्य की पूर्ति करती है?

'एजुकेशन' (Education) शब्द दो शब्दों 'e' (अंदर से) और 'duco' (विकसित करने के लिए) से मिलकर बना है। इसका अर्थ है "किसी की आंतरिक रूप से वृद्धि और विकास करना।"

इस प्रकार शिक्षा सामान्य ज्ञान प्राप्त करने, तर्क करने और निर्णय लेने की शक्तियाँ विकसित करने तथा आम तौर पर बौद्धिक रूप से जीवन के लिए स्वयं को या दूसरों को तैयार करने की क्रिया या प्रक्रिया है।

## किसी व्यक्ति के जीवन के विभिन्न पहलुओं में शिक्षा की भूमिका

- **शिक्षा का विकासात्मक साँचा:** वैदिक ऋषियों ने मनुष्यों को **अमृतस्य पुत्राः** के रूप में संबोधित किया है। इसका अर्थ है कि निश्चित रूप से सीमित होते हुए भी हमने अनंत संभावनाओं के साथ जन्म लिया है। अतः गुणवत्तापूर्ण शिक्षा निम्नलिखित को सुनिश्चित करती है:
    - **चरित्र का विकास:** एक मनुष्य को सही अर्थ में 'व्यक्ति' कहलाने के लिए तीन गुणों– जागरूकता (विवेक), स्वतंत्र इच्छा का उपयोग करने की क्षमता (इच्छा–स्वातंत्र्य, स्वरत) और अपने आचरण के लिए जवाबदेही (भोक्ता) का विकास करने के साथ ही उनमें उत्कृष्टता प्राप्त करनी होती है। चार प्रमुख सद्गुण– मैत्री (सार्वभौमिक मित्रता), करुणा (सार्वभौमिक दया), मुदिता (सार्वभौमिक परोपकार) और उपेक्षा (निस्वार्थता और समभाव) उक्त सभी गुणों को समाहित कर सकते हैं। केवल उचित शिक्षा के माध्यम से ही इस आत्म–अनुभूति को प्राप्त किया जा सकता है।
    - **व्यक्तित्व का विकास:** शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करती है। साथ ही, यह अंतर्निहित क्षमताओं के पूर्ण विकास के अवसर प्रदान करती है और इन्हें समझने हेतु क्षमताओं को भी बढ़ाती है।
    - **दिशा:** शिक्षा के माध्यम से बच्चों को अपने जीवन के लक्ष्यों को तय करने के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल तथा दिशा प्राप्त होता है। इसके साथ ही, सामाजिक रूप से स्वीकार्य और वांछनीय माध्यमों से इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के तरीकों पर मार्गदर्शन भी मिलता है।
    - **सशक्तीकरण:** शिक्षा व्यक्ति की क्षमता का विकास कर उसे प्राकृतिक तथा सामाजिक–सांस्कृतिक दोनों तरह के परिवेश के लिए उपयुक्त बनाती है। साथ ही, उसे अज्ञानता, अंधविश्वास, झूठी मान्यताओं एवं नैतिक दुर्बलता से मुक्त करती है।

"शिक्षा से मेरा तात्पर्य किसी बालक और मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा के सर्वांगीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास से है।" – **महात्मा गांधी**

**क्या 'सीखना' (लर्निंग), 'शिक्षा' (एजुकेशन) के समान है?**

- सीखना एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके परिणामस्वरूप अभ्यास या अनुभव के माध्यम से व्यवहार में लगभग स्थायी परिवर्तन होता है। इसके विपरीत, शिक्षा का संबंध व्यक्ति और समाज की आवश्यकताओं के अनुसार मानवीय क्षमताओं तथा शक्तियों के सामंजस्यपूर्ण विकास से है।
- सामाजिक मूल्यों की दृष्टि से **सीखना सकारात्मक या नकारात्मक हो सकता है, जबकि शिक्षा हमेशा सकारात्मक** होती है। उदाहरण के लिए, सीखने के परिणामस्वरूप सामाजिक रूप से अस्वीकार्य व्यवहार भी सृजित हो सकते हैं, जैसे कि चोरी करना। लेकिन, ऐसे नकारात्मक व्यवहार सीखने को कभी भी शिक्षा नहीं कहा जा सकता।
- इस प्रकार, शिक्षा और सीखने के बीच एक प्रकार से **"स्वामी–कामगार" जैसा संबंध** है। शिक्षा सामंजस्यपूर्ण व्यक्तित्व विकसित करने के अपने व्यापक लक्ष्यों की पूर्ति के लिए सीखने की प्रक्रिया का उपयोग करती है।

"शिक्षा आत्म ज्ञान की प्राप्ति है।" – **आदिकवि शंकराचार्य**

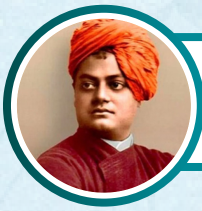

**"शिक्षा मनुष्य में पहले से विद्यमान पूर्णता की अभिव्यक्ति है।" – स्वामी विवेकानंद**

**शिक्षा का आध्यात्मिक साँचा:** शिक्षा की कई परिभाषाओं में ऐसा पूर्वानुमान है कि प्रत्येक मानवीय आत्मा उस समग्रता का एक हिस्सा है, जो ईश्वर में अभिव्यक्त होती है। शिक्षा का उद्देश्य सभी के कल्याण के लिए कार्य करके अपने आप में दिव्य विशाल जगत को महसूस करना है।

**शिक्षा का सामाजिक साँचा:** शिक्षा निम्नलिखित तरीकों से सामाजिक मूल्यों, आदर्शों, विश्वासों और संस्कृति के पोषण, प्रसार एवं सृजन के माध्यम से तीन सामाजिक कार्य करती है:

- **सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति:** शिक्षा गरीबी और अभाव, ठहराव तथा अवनति से मुक्त करने वाली शक्ति के रूप में कार्य करती है। इसके अलावा इसे गरिमा और आनंद के साथ जीवन व्यतीत करने हेतु जीवन के लिए एक तैयारी के रूप में भी देखा जा सकता है।
- **समाजीकरण की प्रक्रिया:** शिक्षा को समाज की एक उप–प्रणाली के रूप में माना जाता है। इसलिए, यह सामाजिक कल्याण और हितों को आगे बढ़ाने के लिए एक साधन तथा मंच है।
- **सामाजिक परिवर्तन और प्रगति की प्रवर्तक:** समाज व्यक्तियों से मिलकर बनता है और जब व्यक्तियों के विचार बदलते हैं, तब समाज में भी परिवर्तन होना तय है। शिक्षा का कार्य इस प्रगतिशील प्रवृत्ति को बनाए रखना है।

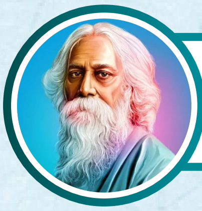

"शिक्षा वह है जो व्यक्ति के जीवन में सभी अस्तित्वों के साथ सामंजस्यपूर्ण संबंध स्थापित करती है।" – **रवींद्रनाथ टैगोर**

- **नागरिक समाज का प्रमाण चिन्ह:** मूल्योन्मुखी शिक्षा मानव जीवन को असभ्य से सभ्य बनाती है। यह दृष्टिकोण और एक दूसरे के प्रेम भाव को व्यापक करते हुए परस्पर देखभाल और साझाकरण में लोगों को सक्षम बनाती है। इससे मनुष्य शांति और सद्भाव से रहते हैं।

## राष्ट्र निर्माण में शिक्षा की भूमिका

शिक्षा किसी राष्ट्र के विकास और उसकी प्रगति में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। "सभी व्यक्तियों के लिए शैक्षिक अवसरों की समानता" राष्ट्र निर्माण के लिए मूलभूत आवश्यकताओं में से एक मानी जाती है।

"एक राष्ट्र केवल तभी आगे बढ़ पायेगा, जब जन–साधारण को शिक्षित किया जाए और उन्हें ऊपर उठाया जाए।" – **स्वामी विवेकानंद**

**राष्ट्र निर्माण में शिक्षा की भूमिका**

- मानव संसाधन क्षमता की प्राप्ति
- सामाजिक एकजुटता को मजबूत करना, जिससे राष्ट्रीय एकता मजबूत हो
- लोकतांत्रिक मूल्यों को बढ़ावा देना
- समाज के समाजवादी पैटर्न की स्थापना करना
- पंथनिरपेक्षता के साथ–साथ विश्ववादी दृष्टिकोण को बढ़ावा देना
- सांस्कृतिक और वैज्ञानिक मूल्यों को बढ़ावा देना
- उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाकर आर्थिक विकास सुनिश्चित करना
- प्रतिभाओं और व्यावहारिक गुणों को बढ़ावा देना

**शिक्षा की प्रकृति और इसकी आवश्यकता, इसे प्राप्त करने के तरीकों तथा आदर्शों को समझने के लिए शिक्षा से जुड़े विभिन्न दर्शनों को समझना होगा।**

## एक छोटी वार्ता !
### मस्तिष्क को शिक्षित करना बनाम हृदय को शिक्षित करना

**विनय:** हेल्लो विनी, मैं अरस्तू का एक उद्धरण पढ़ रहा था, लेकिन उसका अर्थ नहीं समझ पाया। कृप्या, क्या तुम मुझे इस उद्धरण – **"हृदय को शिक्षित किए बिना मस्तिष्क को शिक्षित करना, वास्तव में कोई शिक्षा नहीं है"** को समझने में मदद कर सकती हो?

**विनी:** हेल्लो विनय, तुम इसे ऐसे समझ सकते हो..
देखो, "मस्तिष्क को शिक्षित करने" का अर्थ है– ज्ञान प्राप्त करना, जबकि "हृदय (दिल या मन) को शिक्षित करने" का अर्थ है– बुद्धिमत्ता को विकसित करना। यह बुद्धिमत्ता, प्राप्त ज्ञान के अर्थ और उपयोग की सही समझ का सर्वोत्तम विकास करेगी। यह काफी हद तक उन गुणों से अधिक संबंधित है, जो हमें मानव बनाते हैं, जैसे– सहानुभूति, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, परोपकारिता इत्यादि।

**विनय:** ठीक है.. तो क्या यह **बुद्धि लब्धि** (Intelligence Quotient: IQ) **और भावनात्मक लब्धि** (Emotional Quotient: EQ) **के बीच संतुलन जैसा है?**

**विनी:** हाँ, तुमने ठीक समझा विनय !

**विनय:** क्या तुम दोनों के बीच अंतर करने के लिए कुछ वास्तविक जीवन के उदाहरण दे सकती हो?

**विनी:** उदाहरण के लिए, पेशे से एक केमिकल इंजीनियर ओसामा बिन लादेन जैसे आतंकवादी ने अपने ज्ञान का इस्तेमाल अमानवीय और बर्बर गतिविधियों के लिए किया तथा वह मानवता के लिए खतरनाक साबित हुआ। वहीं दूसरी ओर, महात्मा गांधी एक सफल वकील थे, फिर भी उन्होंने दमित वर्ग के लिए कार्य करने को प्राथमिकता दी और मानवीय गरिमा को अधिकतम महत्त्व दिया।

**विनय:** ठीक है, मैं समझ गया। तो इसका मतलब यह है कि हमें एक संतुष्ट जीवन जीने के लिए "मन या हृदय की शिक्षा" भी आवश्यक है, न कि केवल 'मस्तिष्क की शिक्षा'। धन्यवाद विनी !

# शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न दार्शनिक विचारधाराएँ और वर्तमान समय में उनकी प्रासंगिकता

"शिक्षा का दर्शन" विश्व भर के दार्शनिकों के लिए रुचि का विषय रहा है। यह अभी भी अनेक वाद–विवाद और रुचियाँ पैदा कर रहा है।

## शिक्षा में दर्शन की पारंपरिक विचारधारा

- **प्रकृतिवाद (Naturalism):** इसे हर्बर्ट स्पेंसर, रवींद्रनाथ टैगोर और महात्मा गांधी जैसे विचारकों ने प्रतिपादित किया था। प्रकृतिवादी मानते हैं कि **अच्छी शिक्षा केवल प्रकृति के सीधे संपर्क से ही संभव है।**
- **आदर्शवाद (Idealism):** यह दर्शन की सबसे पुरानी प्रणाली है। इसका मूल पूर्व में प्राचीन भारत और पश्चिम में प्लेटो तक जाता है।
  - आदर्शवाद **मनुष्य के आध्यात्मिक पक्ष पर बल** देता है। इसलिए, इस विचारधारा में इस पक्ष की प्राप्ति के लिए बौद्धिक गतिविधियों, नैतिक निर्णय, सौंदर्य संबंधी निर्णय, आत्म–अनुभूति, व्यक्तिगत स्वतंत्रता, व्यक्तिगत जिम्मेदारी और आत्म–नियंत्रण को प्राथमिकता दी जाती है।
  - इस दर्शन के श्री अरबिंदो जैसे भारतीय समर्थकों ने नैतिक, धार्मिक तथा शारीरिक शिक्षा को महत्त्व दिया है। वे इन्हें प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर शिक्षा का अनिवार्य हिस्सा बनाना चाहते थे।
- **व्यवहारवाद (Pragmatism):** इसे आम तौर पर एक अमेरिकी दर्शन के रूप में माना जाता है। लेकिन इसकी जड़ें प्राचीन यूनानी दर्शन में खोजी जा सकती हैं।
  - इसमें **कार्यात्मक ज्ञान तथा समझ पर बल** दिया जाता है। यह मानक, स्थायी तथा शाश्वत मूल्यों का खंडन करता है। इस दर्शन के अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को सोचने का तरीका सिखाना है, ताकि वह परिवर्तनशील समाज के साथ समन्वय स्थापित कर सके।

## एक छोटी वार्ता !
### शिक्षा के मार्ग

**विनय:** विनी, मेरा मानना है कि औपचारिक शिक्षा केवल स्कूल जाने से ही संभव है। प्रकृति हमें कैसे सिखा सकती है?

**विनी:** विनय, प्रकृति में प्रत्येक अस्तित्वमान चीज का अपना विकास चक्र और प्रक्रिया होती है, चाहे वह बादलों का निर्माण हो या पौधों का बढ़ना इत्यादि। सावधानीपूर्वक अवलोकन के माध्यम से, हम सामंजस्यपूर्ण संतुलन, रचनात्मकता, सतत उपयोग और एकीकृत विकास को देख सकते हैं। इस प्रकार प्रकृति हमें **करुणा, सहानुभूति, शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व और संधारणीयता जैसे मूल्य सिखाती है।**

**विनय:** लेकिन हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली प्रकृति के संदर्भ में ऐसी व्यावहारिक शिक्षा पर ध्यान केंद्रित नहीं करती है। तो क्या इसका मतलब यह है कि यह शिक्षा प्रणाली हमें प्रकृति से दूर ले जा रही है?

**विनी:** हाँ, उपभोक्तावादी संस्कृति में वृद्धि का यह प्रमुख कारण है। इसके परिणामस्वरूप जलवायु परिवर्तन, व्यापक वनोन्मूलन, पर्यावरण प्रदूषण आदि जैसी समस्याएं सामने आ रही हैं।

**विनय:** यह प्रकृति आधारित शिक्षा सीखने का आदर्श माध्यम प्रतीत होती है !

**विनी:** हाँ, यह वास्तव में एक आदर्श माध्यम है। हम उत्तरदायित्वपूर्ण व्यवहार एवं आत्म–नियंत्रण जैसे गुणों को विकसित करके अपने भीतर दिव्य स्व को महसूस कर सकते हैं। इससे हमें सीखने तथा आगे बढ़ने में भी मदद मिल सकती है। क्या तुम जानते हो कि मनुष्यों में इन गुणों की कमी के कारण सामाजिक कुरीतियों जैसे कि अपराध, आतंकवाद, महिलाओं को एक वस्तु के रूप में देखे जाने आदि को बढ़ावा मिल रहा है।

**विनय:** मैं सहमत हूँ। लेकिन क्या तुमको नहीं लगता कि इन नैतिक मूल्यों के विकास पर बहुत अधिक ध्यान देना मानवता की प्रगति में बाधक है? हम इसलिए शिक्षा प्राप्त करते हैं, ताकि हम अच्छी नौकरी प्राप्त कर सकें और जीविका अर्जित कर सकें। व्यावहारिक जीवन में इस आदर्शवाद के लिए कहाँ जगह है?

**विनी:** व्यवहारवादी दर्शन हमें यही सिखाता है। हमें वर्तमान की जरूरतों के अनुसार शिक्षा के उपयोगितावादी पहलू पर ध्यान देने की आवश्यकता है, लेकिन इसका प्रकृति सहित मूल्य प्रणाली के साथ भी तालमेल होना चाहिए।

**विनय:** क्या तुम इसे और विस्तार से बता सकती हो?

**विनी:** देखो, उदाहरण के लिए, तकनीकी प्रगति के वर्तमान युग में, हम केवल अपनी वैदिक शिक्षा की प्राचीन प्रणाली पर ही ध्यान केंद्रित नहीं कर सकते। हमें प्रगतिशील और तकनीकी रूप से स्वयं को अपडेट करने की आवश्यकता है। लेकिन साथ ही हम प्रगति के नाम पर बुनियादी मानवीय मूल्यों से समझौता भी नहीं कर सकते या प्रकृति को नुकसान नहीं पहुँचा सकते। प्राचीन मूल्य प्रणाली और प्रकृति आधारित शिक्षा की भूमिका यहीं सामने आती है।

**विनय:** तो, इसका मतलब यह है कि इनमें से प्रत्येक दर्शन जीवन के एक विशेष पहलू पर ध्यान केंद्रित करता है, लेकिन केवल इनका सही मिश्रण ही एक मजबूत और समग्र शिक्षा प्रणाली के निर्माण में मदद कर सकता है!

# शिक्षा के समकालीन भारतीय दर्शन

समकालीन भारतीय शैक्षिक दर्शन में प्रमुखता प्राप्त करने वाली प्रवृत्तियों में 'प्राचीन ज्ञान का पुनरुत्थानवाद', 'तर्कवाद', 'एकात्मवाद', 'राष्ट्रवाद', 'प्रत्यक्षवाद', 'वैज्ञानिक स्वभाव' आदि शामिल हैं। शिक्षा के समकालीन भारतीय दार्शनिक जैसे कि जवाहरलाल नेहरू, एम. एन. रॉय और सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने समकालीन समस्याओं से निपटने के लिए इन दर्शनों एवं शिक्षा प्रणाली में इन्हें सम्मिलित करने पर ध्यान केंद्रित किया।

- **पुनरुत्थानवाद (Revivalism)**: यह मानता है कि समकालीन भारतीय शिक्षा को अधिक प्रभावी शिक्षण के लिए संचार के आधुनिक साधनों, श्रव्य–दृश्य उपकरणों आदि का उपयोग करते हुए प्राचीन आदर्शों, मूल्यों और सामाजिक संबंधों के मॉडल का पालन करना चाहिए।
- **तर्कवाद (Rationalism)**: इसका विकास 17वीं शताब्दी के दौरान हुआ था। इसमें कहा गया है कि ज्ञान विवेक से आता है और यह निम्नलिखित अवधारणाओं पर आधारित है:
  - **जन्मजात ज्ञान:** तर्कवादियों का मानना है कि हम खाली स्लेट जैसे मस्तिष्क के साथ पैदा नहीं होते हैं, बल्कि वास्तविक विश्व का अनुभव करने से पहले ही हम कुछ चीजों के बारे में जानते हैं। उदाहरण के लिए, जिस प्रकार से दो बच्चे एक ही वस्तु को कुरूप और सुंदर के रूप में देखते हैं, वह सहज/जन्मजात ज्ञान के कारण होता है।
  - **अंतर्ज्ञान/अनुमान:** कुछ सत्य ऐसे हैं, जिन्हें दुनियावी अनुभव से स्वतंत्र होकर भी प्राप्त किया जा सकता है, हालांकि ये जन्मजात रूप से ज्ञात नहीं होते हैं। ऐसे सत्यों के उदाहरणों में तर्क, गणितीय या नैतिक सत्य शामिल हैं।
- **राष्ट्रवाद (Nationalism)**: यह शिक्षा में परिलक्षित होता है, क्योंकि राष्ट्र देशभक्ति और निष्ठा विकसित करने के लिए सांस्कृतिक विरासत की ओर देखने को बल देते हैं।
  - आइज़क कंडेल और एडवर्ड रीस्नर ने शिक्षा पर राष्ट्रवाद के प्रभावों का अध्ययन किया था। उन्होंने पाठ्यक्रम में परिलक्षित निम्नलिखित **तीन प्राथमिक विषयों** की पहचान की थी:
    - **सभी राष्ट्रों का एक इतिहास होता है।** राष्ट्र के इतिहास और मिथकों के संयोजन से उस राष्ट्र की सामूहिक स्मृति का निर्माण होता है। इससे संपूर्ण राष्ट्र की जनता में समान प्रतिक्रिया उत्पन्न होती है। उदाहरण के लिए, जब राष्ट्रगान बजाया जाता है, तो लगभग सार्वभौमिक रूप से अत्यधिक सम्मान की प्रतिक्रिया परिलक्षित होती है।

### तर्क बनाम अनुभव: ज्ञान का मौलिक स्रोत क्या है?

**अनुभववाद** (Empiricism) के रूप में विख्यात एक सिद्धांत के अनुसार, **ज्ञान केवल या प्राथमिक रूप से संवेदी अनुभव (इंद्रियों) से आता है।** सबसे प्रसिद्ध अनुभववादियों में से एक, जॉन लॉक के अनुसार, जब हम संसार में आते हैं, तो **मस्तिष्क एक खाली स्लेट** की तरह होता है। बाद में अनुभव प्राप्त करते हुए हम **ज्ञान और जानकारी** प्राप्त करते हैं।

हालांकि, यदि ज्ञान केवल अनुभव के माध्यम से आता, तो हमारे लिए उस चीज के बारे में बात करना असंभव होता जिसे हमने अनुभव नहीं किया है। यह दावा धार्मिक और नैतिक अवधारणाओं की वैधता पर सवाल उठाता है, क्योंकि इन अवधारणाओं को देखा या अनुभव नहीं किया जा सकता है।

इसलिए, **तर्क और अनुभव दोनों ही ज्ञान के स्रोत हो सकते हैं।** भाषा सीखने को इसके एक उदाहरण के रूप में लिया जा सकता है। हालांकि, किसी भाषा में महारत हासिल करने के लिए अनुभव की आवश्यकता होती है, लेकिन भाषा सीखने के लिए एक निश्चित मात्रा में अंतर्ज्ञान, अनुमान और सहज ज्ञान की भी आवश्यकता होती है।

- **लोगों को यह पहचानने में मदद करना कि वे विशिष्ट हैं** और राष्ट्र के भीतर ही दूसरों से अलग हैं। प्रत्येक व्यक्ति को यह सिखाना कि उसकी अभिव्यक्ति बहुत महत्व रखती है और राजनीतिक व्यवस्था के भीतर इसे प्रदर्शित करना राष्ट्रवाद का प्रमाण है।
- **यह लोगों को एक विशेष क्षेत्र के साथ अपनी पहचान को जोड़ने में सक्षम बनाता है,** जिसकी सीमाएँ हों, एक नाम हो, एक राजधानी हो और ज़्यादातर मामलों में समान संस्कृति हो।

**प्रत्यक्षवाद (Positivism)**: यह प्रत्यक्ष पर आधारित या इंद्रियों से प्राप्त ज्ञान को विश्वसनीय व प्रामाणिक मानता है। यह ज्ञान को इंद्रिय बोधों और वस्तुनिष्ठ वास्तविकता की जांच पर आधारित अवलोकन योग्य तथ्य के वर्णन तक सीमित करता है। यह सुनिश्चित करना शिक्षकों का कार्य है कि निर्देश स्पष्ट हैं अथवा नहीं और छात्र समझें कि वे क्या और कैसे सीख सीखेंगे। छात्रों से ऐसी अपेक्षा की जाती है कि वे विभिन्न माध्यमों के साथ दोहराव और अभ्यास करके, पढ़े गए विषय की स्पष्ट समझ विकसित करें।

**सारसंग्रहवाद (Eclecticism):** सारसंग्रहवाद एक वैचारिक दृष्टिकोण है। यह किसी एक प्रतिमान या मान्यताओं का कठोरता से पालन नहीं करता है। यह किसी विषय के संदर्भ में पूरक अंतर्दृष्टि प्राप्त करने या विशेष मामलों में विभिन्न सिद्धांतों को लागू करने के लिए कई सिद्धांतों, शैलियों या विचारों को अपनाता है।

- इस दृष्टिकोण में **सीखने की हर प्रकार की गतिविधि** शामिल है। यह शिक्षार्थी को नीरसता से बचाने के साथ ही परिस्थितियों के अनुसार व्यवहारिक ज्ञान तथा सीखने की पद्धति को आकार प्रदान करने का अवसर भी उपलब्ध करवाता है। यह **प्री स्कूल लर्निंग के लिए अधिक उपयुक्त** है, जहाँ बच्चे सीखने के अच्छे तरीके खोजने के साथ-साथ उनका उपयोग भी करते हैं।

## वर्तमान में डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता:

डॉ. राधाकृष्णन ने शिक्षा को अकादमिक और पेशेवर से परे एक ज्ञान के रूप में माना। उनके शैक्षिक विचार आज भी विशेष रूप से चरित्र के विकास और नैतिक मूल्यों की स्थापना के क्षेत्र में महत्त्व रखते हैं:

- **विषयों का कोई सख्त सीमांकन नहीं**: राधाकृष्णन का विचार था कि विज्ञान हमारे बाहरी जीवन के निर्माण में हमारी मदद करता है, लेकिन सामाजिक अध्ययन या मानविकी जैसे अन्य विषय जीवन को सुदृढ़ और परिष्कृत करने के लिए आवश्यक हैं।
- **आध्यात्मिक शिक्षा पर बल**: आधुनिक समय में आध्यात्मिक मूल्यों, अच्छे आचरण, ईमानदारी तथा भाईचारे की भावना को बढ़ावा देने पर लक्षित शिक्षा, विशेष रूप से विज्ञान और प्रौद्योगिकी के इस युग में मन, शरीर तथा अन्य के साथ अलगाव को दूर करने के लिए बहुत प्रासंगिक है।
- **राष्ट्रीय एकता**: राष्ट्रवाद के विकास के लिए धार्मिक शिक्षा, सामुदायिक जीवन और सामाजिक सेवाओं के अध्ययन जैसे सामूहिक शिक्षा कार्यक्रमों पर बल दिया गया।
- **अंतर्राष्ट्रीय समझ**: उन्होंने शिक्षा को अंतर्राष्ट्रीय समझ और सीमा-पार आपसी सामंजस्य बनाने हेतु एक साधन के रूप में देखा। यह विश्व से आतंकवाद, पर्यावरण प्रदूषण, गरीबी, बेरोजगारी और बीमारियों जैसी विभिन्न समस्याओं को समाप्त करने के लिए आवश्यक है।
- **शिक्षक-शिक्षा संबंध**: "प्राचीन प्रणाली की भांति अच्छे शिक्षक-छात्र संबंध" के साथ जीवन के लिए उच्च आदर्शों हेतु शिक्षा कई सामाजिक बीमारियों, बुराइयों और परेशानियों का सर्वोत्तम समाधान हो सकती है। यह छात्रों के बीच सहचर-भावना, सामंजस्य और साझाकरण के दृष्टिकोण की भावना पैदा करने में मदद करती है।

इसके अलावा, उन्होंने हर जाति, पंथ, लिंग और सामाजिक-आर्थिक स्थिति के सभी बच्चों के लिए निःशुल्क तथा अनिवार्य शिक्षा का पुरजोर समर्थन किया था। साथ ही, वह एक ऐसी शिक्षा प्रणाली में विश्वास करते थे, जो मानव कल्याण और खुशहाली पर केंद्रित **नैतिक राजनीति सिखाती हो।**

# भारत की शिक्षा प्रणाली में ये दार्शनिक विचार किस हद तक अभिव्यक्त हुए हैं और इन प्रणालियों ने अपने उद्देश्य को पूरा करने में किस हद तक कामयाबी हासिल की है?

भारतीय संस्कृति में शिक्षा का सम्मानजनक स्थान रहा है। सभ्यता की शुरुआत के बाद से ही भारत में शैक्षणिक संस्थान मौजूद रहे हैं। भारत में शिक्षा प्रणाली बदलती प्राथमिकताओं के अनुसार समय के साथ विभिन्न तरीकों से विकसित हुई है:

**प्राचीन भारत/वैदिक शिक्षा प्रणाली**: वैदिक शिक्षा प्रणाली में बहिरात्मा और अन्तरात्मा दोनों की देखभाल करके व्यक्ति के समग्र विकास पर बल दिया जाता था। इस प्रणाली में वेदों तथा उपनिषदों के सिद्धांतों का पालन किया जाता था। इसमें जीवन के नैतिक, शारीरिक, आध्यात्मिक एवं बौद्धिक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित किया जाता था। इसके अलावा छात्रों को विनम्रता, सच्चाई, अनुशासन, आत्मनिर्भरता और सभी जीवों का सम्मान करने जैसी नैतिकता भी प्रदान की जाती थी।

| सकारात्मक | नकारात्मक |
| --- | --- |
| यह प्रणाली छात्रों के **समग्र विकास पर केंद्रित** थी।<br>सैद्धान्तिक ज्ञान की अपेक्षा **व्यवहारिक ज्ञान पर अधिक बल** दिया जाता था।<br>छात्रों पर पढ़ाई से संबंधित कोई दबाव नहीं डाला जाता था, ताकि वे प्रभावी ढंग से सीख सकें।<br>पाठ्यक्रम के निर्धारण में सरकार का कोई हस्तक्षेप नहीं था। **उस समय राजा शिक्षा के विकास में मदद करते थे।** | यह प्रणाली समाज में **वर्ण विभाजन (जाति)** के लिए जिम्मेदार थी, क्योंकि गुरुकुल केवल भारतीय समाज की उच्च जातियों के लिए ही खुले थे। अन्य जाति के लोगों को किसी भी औपचारिक शिक्षा से वंचित रखा गया था।<br>**गुरुकुल में लड़कियों को शिक्षा नहीं दी जाती थी।** |

## शिक्षा की प्राचीन प्रणाली में छात्रों के समग्र विकास का ध्यान कैसे रखा जाता था?

वैदिक शिक्षा प्रणाली में एकांत स्थान पर छात्रों को शिक्षा प्रदान की जाती थी। इस स्थान को **गुरुकुल** के नाम से जाना जाता था तथा छात्रों को **शिष्य** कहा जाता था। इस प्रणाली ने विभिन्न तरीकों से शैक्षिक प्रयोग के लिए एक प्रयोगशाला के रूप में कार्य किया था। जैसेः

- **जीवन से संबंधित ज्ञानः** छात्र प्राकृतिक परिवेश शिक्षा ग्रहण करते थे और भौतिक विश्व से दूर रहते थे। वे अपने शिक्षक के पास बैठकर अध्ययन करते थे। वे जीवन की सभी जटिल समस्याओं को सुनकर तथा ध्यान के माध्यम से समझते थे।
- **शिक्षक और छात्र के बीच घनिष्ठ संबंध** के परिणामस्वरूप समर्पित सेवा की भावना के साथ–साथ छात्र का सर्वांगीण विकास होता था।
- **सामाजिक कार्यों में विकासः** ईंधन के लिए लकड़ी इकट्ठा करना, जल की आपूर्ति करना और शिक्षक के लिए अन्य घरेलू काम करना छात्र का पवित्र कर्तव्य था।
- **व्यावसायिक प्रशिक्षणः** गुरुकुल परिसर में विद्यार्थियों को पशुपालन, कृषि एवं डेयरी फार्मिंग आदि से जुड़े कार्यों में संलग्न कर उन्हें इन उद्योगों का प्रशिक्षण दिया जाता था।
- **मानवीय गुणों को बढ़ावाः** शिष्यों द्वारा स्वयं के निर्वाह और गुरु की सेवा के लिए भिक्षा माँगने से उनमें परिणामस्वरूप विनम्रता जैसे मूल्य पैदा होते थे।

**इस्लामी शिक्षा प्रणालीः** मध्यकाल में शिक्षा का मुख्य उद्देश्य ज्ञान का प्रसार और इस्लाम का प्रचार था। पारंपरिक मदरसे और मक्तब शिक्षा के इस्लामी केंद्र थे। इस प्रणाली के तहत शिक्षा व्यावहारिक अध्ययन से लेकर इस्लामी सिद्धांतों, सामाजिक परंपराओं और राजनीतिक सिद्धांतों के आधार पर नैतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों के विकास पर केंद्रित थी।

| सकारात्मक | नकारात्मक |
| --- | --- |
| व्यावहारिक शिक्षा को अधिक महत्व दिया जाता था।<br>छात्रों और शिक्षक के संबंध अच्छे थे।<br>छात्रों को एकदम शुरुआत से पढ़ाया जाता था और शासकों ने भी शिक्षा के विकास का समर्थन किया था। | धार्मिक और इस्लामी शिक्षा को अधिक महत्त्व दिया गया था।<br>छात्र देश पर शासन करने के लिए नेतृत्व पर ध्यान केंद्रित करते थे। |

**अंग्रेजी शिक्षा प्रणालीः** भारतीय उपमहाद्वीप में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के विस्तार होने से अंग्रेजों तथा भारतीयों के मध्य संचार को बढ़ावा देने हेतु आम जनता के लिए **उपयोगितावादी शिक्षा की आवश्यकता** महसूस की गई। नतीजतन, "अधोगामी निस्पंदन का सिद्धांत" **(Downward Filtration Theory)** अपनाया गया।

- विज्ञान और गणित के साथ पाठ्यक्रम में अंग्रेजी भाषा की शुरुआत को उपयोगितावादी विषय माना जाता था, जबकि तत्वमीमांसा तथा दर्शन जैसे विषयों को अनावश्यक माना जाता था।
- इन सुधारों को बाद में मैकालेवाद **(Macaulayism)** के रूप में जाना जाने लगा। यह भारत में वर्तमान शिक्षा प्रणाली का आधार बन गया।

**वर्तमान में हमें एक ऐसा वर्ग बनाने का पूर्ण प्रयास करना चाहिए, जो हमारे और उन लाखों लोगों के बीच दुभाषिया हो, जिन पर हम शासन करते हैं: एक ऐसा वर्ग जो रक्त और रंग में तो भारतीय हो, लेकिन रुचि, विचारों, नैतिकता तथा बुद्धि में अंग्रेज हो।**

**थॉमस बैबिंगटन मैकाले**

| सकारात्मक | नकारात्मक |
|---|---|
| पढ़ाई में तकनीक का इस्तेमाल।<br>भारत में **रोजगार** बढ़ाने के लिए कई कार्यक्रम और मिशन शुरू किये गए।<br>अच्छे बुनियादी ढांचे और परिवेश वाले **शीर्ष श्रेणी के विश्वविद्यालय** एवं कॉलेज खोले गए। | शिक्षा, प्रबंधन और पाठ्यक्रम में **सरकार का हस्तक्षेप**।<br>सरकारी स्कूलों और कॉलेजों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षण के साथ-साथ उत्तम परिवेश का भी अभाव था।<br>निजी संस्थानों की फीस में वृद्धि और ग्रामीण क्षेत्रों में संपर्क की कमी ने **असमानताएँ** पैदा की।<br>**व्यावहारिक ज्ञान की ओर झुकाव का अभाव।**<br>कक्षाओं तक सीमित अध्यापन के कारण **प्रकृति से अलगाव** होने लगा।<br>**शिक्षक और छात्र के बीच सतही संबंध।** |

बाद के वर्षों में भारतीय शिक्षा प्रणाली के अवलोकन के लिए विभिन्न आयोगों की स्थापना की गई थी। यद्यपि, इन आयोगों का मुख्य उद्देश्य अधिक कुशल कार्यबल उत्पन्न करने की धारणा के साथ जुड़ा हुआ था, ताकि युग के बढ़ते औद्योगिकीकरण को तीव्र किया जा सके।

- **स्वतंत्रता के बाद की शिक्षा प्रणाली:** औपनिवेशिक युग की शिक्षा प्रणाली थोड़े-बहुत बदलाव के साथ स्वतंत्रता के बाद के दो दशकों तक जारी रही।
  - **पहली राष्ट्रीय नीति, 1968 कोठारी आयोग (1964-1966) की रिपोर्ट और सिफारिशों के आधार पर लाई गई थी।** इस नीति ने **राष्ट्रीय एकीकरण तथा सांस्कृतिक एवं आर्थिक विकास प्राप्त करने के लिए** शिक्षा प्रणाली में आमूलचूल परिवर्तन का प्रस्ताव प्रस्तुत किया था।
  - सरकार द्वारा दूसरी **राष्ट्रीय शिक्षा नीति वर्ष 1986 में** लागू की गई। यह विशेष रूप से भारतीय महिलाओं तथा समाज के पिछड़े वर्गों के लिए "असमानताओं को दूर करने और शैक्षिक अवसरों को समान करने पर विशेष बल" पर केंद्रित थी।

भारत में सरकार शिक्षा पर लगातार ध्यान दे रही है और प्रत्येक बच्चे को मौलिक अधिकार के रूप में शिक्षित करने के लिए हर संभव प्रयास कर रही है। नतीजतन, साक्षरता दर में लगातार सुधार हो रहा है, लेकिन फिर भी इस प्रक्रिया में बाधाएँ भी आ रही हैं।

**भारतीय शिक्षा प्रणाली का विकास-क्रम**

- वर्ग विशेष के लिए शिक्षा से आगे बढ़कर आम जनता के लिए शिक्षा
- अनुपलब्ध से सर्व-सुलभ सामग्री
- दार्शनिक शिक्षा से उपयोगितावादी ज्ञान
- समग्र शिक्षा से विशिष्ट शिक्षा

## वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली में कौन-सी समस्याएं विद्यमान हैं?

- **सीखने की बजाय अधिक अंक लाने पर ज्यादा ध्यान देना:** अंग्रेजों द्वारा डिजाइन किए गए पाठ्यक्रम का स्वरूप अभी भी मौजूद है। इसमें सर्वांगीण विकास प्राप्त करने की बजाय अच्छे ग्रेड प्राप्त करने पर बहुत अधिक बल दिया जाता है। नतीजतन, किताबी ज्ञान पीढ़ी दर पीढ़ी छात्रों को दिया जा रहा है।
- **शिक्षण का सैद्धांतिक तरीका:** रचनात्मक ढंग से सीखने तथा सोचने के लिए कोई स्थान नहीं है। छात्र हमेशा एक विशिष्ट पाठ्यक्रम से बंधे होते हैं। उन्हें वास्तव में बाहरी दुनिया से सीखने के लिए प्रोत्साहित नहीं किया जाता है।
- **खेल-कूद को कम महत्त्व:** भारतीय शिक्षा प्रणाली में अंतिम परिणाम तथा बोर्ड परीक्षाएँ अत्यधिक महत्त्व रखती हैं। पर्याप्त अंक न मिलने पर छात्रों का अक्सर मानसिक रूप से तिरस्कार किया जाता है। खेल, कला-शिल्प एवं पाठ्येतर गतिविधियों को समाज, माता-पिता और संस्थानों द्वारा कम सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है।
- **विशिष्टता की कमी:** सभी छात्रों को एकसमान विषय का अध्ययन करना होता है। उन्हें शिक्षा की एक ही पद्धति से गुजरना पड़ता है। उनकी रुचियों तथा क्षमताओं पर ध्यान नहीं दिया जाता है।
- **शिक्षण पद्धति:** हमारी शिक्षण पद्धति अत्यधिक नीरस है। इसमें गतिशीलता तथा चपलता की कमी है। भले ही इन दिनों ई-लर्निंग पद्धति बहुत अधिक प्रचलित हो गई है, परन्तु यह देश के बहुत ही छोटे हिस्से (तुलनात्मक रूप से विकसित) में प्रचारित है।
- **कार्यात्मक साक्षरता का अभाव:** अच्छे ग्रेड प्राप्त करने के लिए रटकर पढ़ने पर ध्यान देने के कारण अवधारणाओं की कार्यात्मक साक्षरता पूरी तरह से दूर हो चुकी है।

विडम्बना यह है कि हम इस शैली के आदी हो गए हैं। लेकिन मौजूदा मुद्दे हमें ऐसी स्थिति की ओर ले जा रहे हैं, जहाँ हम अपने बच्चों में चारित्रिक कमी और मूल्यहीनता के गंभीर संकट को देख रहे हैं। इसके परिणामस्वरूप चौतरफा विनाशकारी व्यवहार को बढ़ावा मिल रहा है।

# राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 भारत की शिक्षा प्रणाली में सुधार के लिए दार्शनिक विचारों को कैसे आगे बढ़ाएगी?

**राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020** भारतीय लोकाचार में निहित एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की कल्पना करती है, जो भारत को एक समान तथा जीवंत ज्ञानी समाज में सतत रूप से परिवर्तित करने में सीधे योगदान देती है। इसका उद्देश्य सभी को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करते हुए भारत को वैश्विक ज्ञान की महाशक्ति बनाना है।

इस नीति का दृष्टिकोण शिक्षार्थियों के बीच न केवल **विचार में, बल्कि आत्मा, बुद्धि और कर्मों में भी भारतीय होने का गहरा गर्व पैदा करना है।** इसका उद्देश्य ऐसे ज्ञान, कौशल, मूल्य तथा स्वभाव को विकसित करना है, जो मानवाधिकारों, सतत विकास और वैश्विक कल्याण के प्रति जिम्मेदार प्रतिबद्धता का समर्थन करते हों। इससे वास्तव में वैश्विक नागरिक होने का भाव प्रतिबिंबित होगा।

वो बुनियादी सिद्धांत जो बड़े पैमाने पर भारतीय शिक्षा प्रणाली तथा इसके भीतर संस्थानों का मार्गदर्शन करेंगे, इस प्रकार हैं:

- प्रत्येक छात्र की अनूठी क्षमताओं को बढ़ावा देना,
- बहुविषयक और समग्र शिक्षा
- नैतिकता, मानवीय और संवैधानिक मूल्य
- समता और समावेशन
- अवधारणात्मक समझ पर बल
- बहुभाषावाद और भाषा की शक्ति को बढ़ावा देना
- विविधता और स्थानीय संदर्भ के प्रति सम्मान
- रचनात्मकता और गहन चिंतन
- जीवन कौशल

हमारी शिक्षा प्रणाली के विभिन्न स्तरों में इन सिद्धांतों की अभिव्यक्ति का अवलोकन प्राथमिक, माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा पर इस सीरीज के अगले डाक्यूमेंट्स में किया जाएगा।

जुड़े रहिये!

# टॉपिक – एक नज़र में

## शिक्षा और इसकी भूमिका

'एजुकेशन' (Education) शब्द दो शब्दों 'e' (अंदर से) और 'duco' (विकसित करने के लिए) से मिलकर बना है। इसका अर्थ है "किसी की आंतरिक रूप से वृद्धि और विकास करना।"

### निजी जीवन में भूमिका

- **विकासात्मकः** चरित्र और व्यक्तित्व का विकास, सही दिशा और सशक्तीकरण।
- **आध्यात्मिकः** आत्मबोध या आंतरिक स्व को महसूस करने में सहायक।
- **सामाजिकः** सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति, सामाजिक कल्याण और हितों को आगे बढ़ाना, सामाजिक परिवर्तन एवं प्रगति का प्रवर्तक, नागरिक समाज का प्रमाण चिन्ह आदि।

"शिक्षा से मेरा तात्पर्य किसी बालक और मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा के सर्वांगीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास से है।" – **महात्मा गांधी**

### राष्ट्र निर्माण में भूमिका

- आर्थिक विकास।
- प्रतिभाओं और व्यावहारिक गुणों को बढ़ावा देना।
- मानव संसाधन क्षमता की प्राप्ति।
- सामाजिक एकजुटता को मजबूत करना, जिससे राष्ट्रीय एकता मजबूत हो।
- लोकतांत्रिक मूल्यों को बढ़ावा देना
- समाज के समाजवादी पैटर्न की स्थापना करना।
- पंथनिरपेक्षता के साथ–साथ महानगरीय दृष्टिकोण को बढ़ावा देना।
- सांस्कृतिक और वैज्ञानिक मूल्यों को बढ़ावा देना।

"एक राष्ट्र केवल तभी आगे बढ़ पायेगा, जब जन–साधारण को शिक्षित किया जाए और उन्हें ऊपर उठाया जाए।" – **स्वामी विवेकानंद**

## शिक्षा से संबद्ध विभिन्न दार्शनिक विचारधाराएँ और उनकी प्रासंगिकता

### पारंपरिक

- **प्रकृतिवादः** अच्छी शिक्षा प्रकृति के सीधे संपर्क से ही संभव है। प्रकृति हमें करुणा, सहानुभूति, शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व और स्थिरता जैसे मूल्य सिखाती है।
- **आदर्शवादः** यह मनुष्य के आध्यात्मिक पक्ष पर बल देती है। यह जिम्मेदार व्यवहार तथा आत्म–नियंत्रण जैसे गुणों को विकसित करती है। इससे हमें सीखने एवं आगे बढ़ने में भी मदद मिल सकती है।
- **व्यवहारवादः** इसमें कार्यात्मक ज्ञान तथा समझ पर बल दिया जाता है। और व्यक्ति को सोचने का तरीका सिखाया जाता है, ताकि वह परिवर्तनशील समाज के साथ समन्वय स्थापित कर सके।

### समकालीन

- **पुनरुत्थानवादः** संचार के आधुनिक साधनों का उपयोग करते हुए प्राचीन आदर्शों और मूल्यों का पालन करना।
- **तर्कवाद और अनुभववादः** दोनों में ज्ञान के स्रोत क्रमशः विवेक और अनुभव हैं।
- **राष्ट्रवादः** राष्ट्र के प्रति देशभक्ति और निष्ठा विकसित करने के लिए सांस्कृतिक विरासत का प्रचार।
- **प्रत्यक्षवादः** ज्ञान को अवलोकन योग्य तथ्य के वर्णन तक सीमित करता है।
- **सारसंग्रहवादः** कई सिद्धांतों से अंतर्दृष्टि प्राप्त करना और सीखने के विभिन्न तरीकों को लागू करना।

## भारतीय शिक्षा प्रणाली में दार्शनिक अभिव्यक्तियों का विकास–क्रम

प्राचीन/वैदिक शिक्षा प्रणाली से आधुनिक शिक्षा प्रणाली तक →

वर्ग विशेष के लिए शिक्षा से आगे बढ़कर आम जनता के लिए शिक्षा → अनुपलब्ध से सर्व–सुलभ सामग्री → दार्शनिक शिक्षा से उपयोगितावादी ज्ञान → समग्र शिक्षा से विशिष्ट शिक्षा

## वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली में विद्यमान चुनौतियाँ

- सीखने की बजाय अधिक अंक प्राप्त करने पर ज्यादा ध्यान।
- शिक्षण का सैद्धांतिक तरीका और रचनात्मक ढंग से सीखने के लिए कोई स्थान नहीं।
- खेल, कला–शिल्प, पाठ्येतर गतिविधियों को कम महत्त्व।
- छात्रों की विशिष्टता पर ध्यान न दिया जाना।
- पुरानी शिक्षण पद्धति।
- कार्यात्मक साक्षरता का अभाव।

## राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 और इसका दृष्टिकोण

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 भारतीय लोकाचार में निहित एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की कल्पना करती है, जो भारत को एक समान तथा जीवंत ज्ञानी समाज में सतत रूप से परिवर्तित करने में, सीधे योगदान देती है।